Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

SS–34–1–T.W.(Hindi)

No. of Printed Pages – 07

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2017

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2017

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक - 18

सजावट - 2

कुल - 20

मुक्ति का माधुर्य

हमारा जीवन प्रेम, शांति, माधुर्य और आनन्द से परिपूर्ण है और अगर परिपूर्ण नहीं लगता, तो इसे परिपूर्ण बनाया जा सकता हैं । जीवन में एक अनुपम संगीत की संभावना है । प्रेम की रसधार छलकती रहे, शान्ति की वीणा बजती रहे और आनन्द का अमृत निर्झरित रहे, तो जीवन से बढ़कर न तो कोई मन्दिर है, न कोई अनुष्ठान और न कोई स्वर्ग । मौसम इतना सुहावना है, बादलों से आसमान आच्छादित है। बादलों के घिर आने के बावजूद आसमान से न तो सूरज खोया है, न चाँद खोया है और न कोटि-कोटि तारे विलुप्त हुए हैं । मेघावली के कारण सूरज और चाँद, आसमान से बरसने वाला अनंत प्रकाश आच्छादित भले ही हो जाये, लेकिन वह विलुप्त नहीं हो सकता । जीवन का प्रेम, उसकी शांति, उसका माधुर्य और उसका आनन्द आवृत हो सकता है, आच्छादित हो सकता है, लेकिन समाप्त नहीं हो सकता ।

समझ और सजगता का अभाव होने के कारण जीवन का संगीत विलुप्त हो गया है, जीवन का आनन्द समाप्त प्राय: हो गया है, जीवन का माधुर्य हमारे हाथ से छूट गया है। मेरे देखे, जीवन में रस है । भावों का रस; क्योंकि जीवन कोई व्यापार नहीं है और न ही यह व्यवहार या कर्त्तव्य है । जीवन का अस्तित्व इससे और आगे भी है । यदि जीवन से आनन्द का संगीत निष्पन्न होता हुआ नजर नहीं आता, तो इसका दोष उन अंगुलियों का है, जो बांसुरी पर ढंग से सध नही पाई । अगर कृष्ण की बांसुरी से वह संगीत और वे स्वर–लहरियाँ ईजाद हो सकती हैं, जिससे सारा विश्व आलोड़ित हो जाये, तो हमारे जीवन में भी वे स्वर – लहरियाँ क्यों नहीं प्रस्फुटित हो सकती ?

मनुष्य के पास जीवन को आनन्दमय बनाने की कला नहीं है । यह बड़े ताज्जुब की बात है कि ढेड बाहर से आदमी अपनी आत्म – शान्ति, अपनी आत्म–मुक्ति के लिए भारत तक पहुँच रहा है, लेकिन भारत का आदमी अनजान, बेखबर बना हुआ है । मनुष्य के हाथ में उसका अपना भाग्य नहीं रहा, इसीलिए मनुष्य भगवान भरोसे हो गया है । 'भारत भाग्य विधाता' विधाता ही भारत का भाग्य है । मनुष्य का जीवन पर भरोसा नहीं रहा। नतीजन यहाँ का मनुष्य जीवन के आनन्द, उसकी शान्ति और उसके माधुर्य से वंचित है ।

गंगा के किनारे बैठा व्यक्ति ही मैल से सना हो, तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। अगर नहाने का प्रयास भी किया जाता है, तो भी पशु की तरह, एक हाथी की तरह। हाथी कितना ही नहा ले, लेकिन बाहर आते ही पीठ पर मिट्टी ही उंडेलेगा। ऐसे ही हम सुबह–शाम अपने पापों को धोने का इंतजाम कर लेते हैं, लेकिन वे इंतज़ाम कोरे इंतज़ाम भर रह जाते हैं । पाप पूरे धुल नहीं पाते और पापों की परत, पापों की काई और चढ़ जाती है ।

धर्म – कर्म – मन्दिर – परमात्मा ये सब तो दूर की बातें हैं । आदमी का न तो धर्म के प्रति लगाव है और न पाप–पुण्य, स्वर्ग – नरक या परमात्मा के प्रति ही उसका जुड़ाव है । उसका लगाव तो धन और यश के प्रति हैं । इसके लिए वह सुबह से रात तक मेहनत करता है । मनुष्य की आसक्ति अपनी संतान के प्रति है, अपने व्यवसाय, पति या पत्नी के प्रति हैं । अगर जितना लगाव पत्नि के प्रति है, उतना ही मां – बाप के प्रति होता, तो बात काफ़ी कुछ हाथ में होती; जितना लगाव उसका धन के प्रति है, उतना ही धर्म के प्रति होता, तो लगाम उसके हाथ में रहती । आदमी के हाथ में तो बस धन आना चाहिए । धन के कारण आदमी धर्म को भी दर किनार कर सकता है ।

धन आये मुट्टी में,

ईमान जाये भट्टी में ।

आदमी को तो बस पैसा चाहिए, चाहे वह जिस तरीके से मिले। आदमी को कोरा रंग चाहिए भले भीतर से वह कितना काला ही क्यों न हो ।

2) **निम्नलिखित पत्र को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :**

अंक

टंकण - 8

सजावट - 2

कुल - 10

<u>राधेश्याम राम गोपाल</u>

''क्रॉकरी के थोक व फुटकर व्यापारी''

तारका पता - क्रॉकरी | चामुंडा बाजार,

दूरभाष नं. 2441615 | हाथरस

पत्र क्रमांक - 2591 | 25 मार्च, 2017

सर्व श्री राधामोहन एण्ड संस.

ए - 15, मध्यममार्ग.

शास्त्रीनगर, आगरा - 20

विषय :- माल के क्षतिग्रस्त होने एवं क्षतिपूर्ति करने के क्रम में ।

प्रिय महोदय,

हमें लिखते हुए अत्यंत खेद है कि 22, फरवरी 2017 को भेजी गई क्रॉकरी के माल में बहुत सा माल टूटा पाया गया। पेटियों पर ''काँच का सामान – सावधानी से रखे'' नहीं लिखा गया जिसके कारण कार्मिकों की लापरवाही से सामग्री क्षतिग्रस्त हुहे है । टूटे सामान का विस्तृत विवरण हमने माल सुपुर्दगी के समय ट्रान्सपोर्ट कम्पनी को बता दिया था, जिसकी सूचना तुरन्त ही आपको भी भिजवा दी गई थी। अपनी व्यापारिक शर्तों के अनुसार हमने दस प्रतिशत हर्जाने के साथ टूटे माल की क्षतिपूर्ति हेतु निवेदन किया था ।

आजतक आपकी ओर से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ हैं । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि आप दस प्रतिशत हर्जाने के साथ माल की क्षतिपूर्ति करना नहीं चाहते हैं ।

अत: बडे दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आप या तो पन्द्रह दिवस में माल की क्षतिपूर्ति दस प्रतिशत हर्जाने के साथ कर दें अन्यथा हमें मजबूर होकर कानूनी कार्यवाही हेतु बाह्य होना पड़ेगा ।

संलान – टूटे मालकी

प्रतिलिपि

भवदीय

राधेश्याम राम गोपाल के लिए

राधेश्याम

(साझेदार)

3) निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

अंक

टंकण – 8

सजावट – 2

कुल – 10

अन्तर्राष्ट्रीय चीनी उत्पादन

(राशि मिलियन डालर)

देश	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
ब्राजील	36.4	38.4	36.1	38.6	37.8
भारत	20.1	26.6	28.6	27.3	27.0
यूरोप	16.9	15.9	18.3	16.7	16.1
चीन	11.4	11.2	12.3	14.0	14.3
थाईलेण्ड़	6.9	9.6	10.3	10.0	11.4
संयुक्त राज्य अमेरिका	7.2	7.1	7.6	8.1	7.7
मैक्सिको	5.1	5.5	5.4	7.4	6.7
अन्य	49.4	47.6	53.5	55.4	54.7
योग	153.4	161.9	172.1	177.5	175.7

DO NOT WRITE ANYTHING HERE